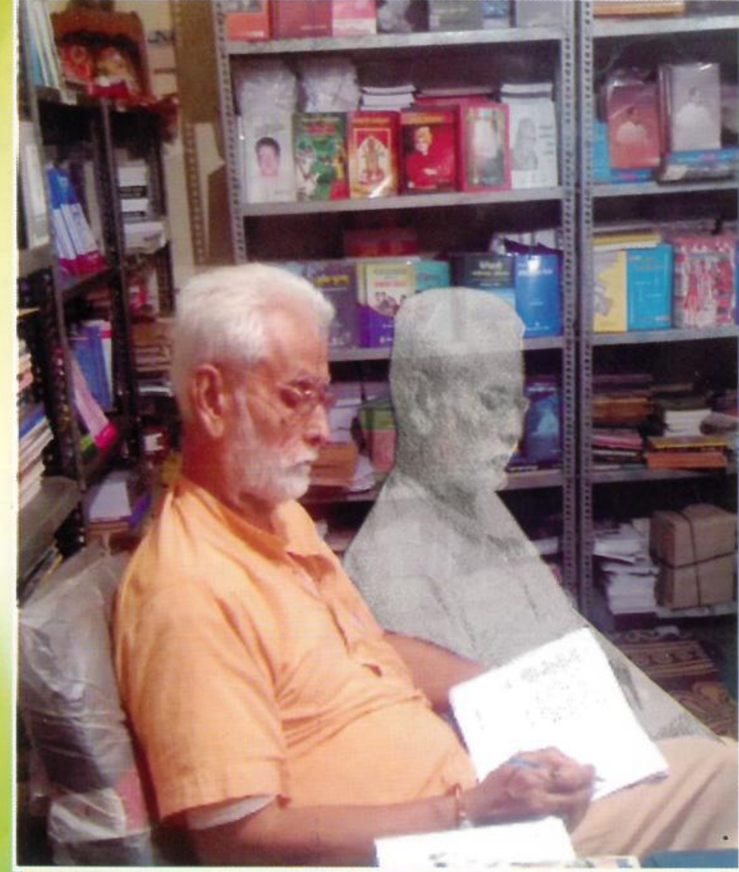
साक्षात्





शरदिन्दु चौधरी



पं. सुधांशु 'शेखर' चौधरीक
सयम जयंतीक
अवसर विशेषपर





पं. सुधांशु 'शेखर' चौधरीक
सयम जयंतीक
अवसर विशेषपर



साक्षात्

संस्मरणात्मक साक्षात्कार

(बात-बातपर बात-IV)

प्रस्तुति

शरदिन्दु चौधरी



शेखर प्रकाशन

पटना

साक्षात्

प्रस्तुति – शरदिन्दु चौधरी

प्रकाशक –
शेखर प्रकाशन
2A/39, इन्द्रपुरी
पटना-800024,
मो.-09334102305

© – श्रीमती चित्रा चौधरी

प्रकाशन वर्ष – सितम्बर, 2021

मूल्य – 60/–टाका

प्रति – 400

शब्द संयोजन – अजय कुमार 'टुटु'

मुद्रक – जयमाता दी ऑफसेट
मछुआटोली, पटना

पुस्तक प्राप्ति स्थानः

शेखर प्रकाशन
महावीर मंदिर से (पश्चिम) पटना जं. के निकट
भुवनेश्वर प्लाजा, पटना-800 001



मैथिली दैनिक 'मिथिला मिहिर'क
सम्पादक
एवं अंग्रेजी दैनिक 'इन्डियन नेशन'क
पत्रकार शिरोमणि

गजेन्द्र नारायण चौधरी

कें सभक्ति

समर्पित

–शरदिन्दु

भूमिका

साक्षात्कारक मादे

साक्षात्कार एकटा एहन विधा अछि जाहिमे अनकासँ ओकर पेटक बात, मोनक बात अथवा ई कही जे ओहि व्यक्तिक मन-मस्तिष्कमे घुरिया रहल बातकेँ निकालब, जे ओ चाहैत अछि व्यक्त करब, मुदा ओकरासँ स्वयं ओ बाहर नहि निकलि पबैत अछि। मुदा आब तँ साक्षात्कार एहन विधा जकाँ व्यवहार होमऽ लागल अछि जकरा अहाँ मोनक भरास कहि सकैत छिऐक। खास कऽ राजनीतिमे तँ एहि विधाकेँ तेहन ने विकृत कऽ देल गेल अछि जे एकर महत्वे दिनानुदिन कम भेल जा रहल अछि। एखन किछु बाजब आ थोड़बे काल बाद ओहिसँ मुकरि जायब। खास कऽ इलेक्ट्रोनिक मीडियाक साक्षात्कारक तँ एहि कारणे कोनो मोले ने रहि गेल अछि।

कहैत छथि बिहारक अंग्रेजी पत्रकारिताक भीष्म पितामह पंडित स्व० दीनानाथ झा (सम्पादक, इन्डियन नेशन, पटना)-'इन्टरव्यू लेनिहारकेँ बोर देबए पड़ैत छैक। जेहन बोर तेहन माछ। कहबाक तात्पर्य ई जे जखन सब संयोग बैसैत छैक तखनहि इन्टरव्यू सफल होइछ।'-ओ जे **कहलनि**, साक्षात्कार संग्रह, प्रस्तुतकर्ता, **स्व० मंत्रनाथ झा 'हंसराज'** प्रकाशन वर्ष-31 अक्टूबर 1971, प्रकाशक-मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, नव विधा, भूमिकासँ। हमरा जनैत प्राय: ई पहिल संग्रह अछि मैथिलीमे साक्षात्कारक जाहिमे समसामयिक दस गोट मैथिलीक उत्थानक अभियानी-साहित्यकार, साहित्य सेवी लोकनिक साक्षात्कार संग्रहीत अछि।

पंडित दीनानाथ झा कहैत छथि साक्षात्कार लेनिहारकेँ बोर देबय पड़ैत छैक। अर्थात् साक्षात्कार लेनिहारकेँ वातावरण, 'मूड', विषय-वस्तुकेँ ध्यानमे रखैत एहन क्षमताक संग ई काज करय पड़ैत छैक जे ओकर उद्देश्यक पूर्ति कऽ सकैक।

हम प्राय: 35-40 गोटेक साक्षात्कार लेने होयब जाहिमे किछु मोन पड़ैत अछि किछु स्मरण नहि अछि। पहिल साक्षात्कार हम **दैनिक मिथिला मिहिर** लेल तत्कालीन शिक्षा मंत्री डा. नागेन्द्र झासँ लेने रहियनि। दैनिक मिहिर लेल प्राय: पांच टा साक्षात्कार लेने रही जाहिमे जनगणना निदेशक बी.

लाल (प्रायः यैह नाम रहनि) सँ लेने रहियनि जे मिथिला मिहिर दैनिकमे छपल आ तकर बाद तँ ओहिपर आधारित कैकटा आलेख नवभारत टाइम्स दैनिक सहित आन-आन अखबारमे छपैत भोजपुरी पत्रिका धरिमे प्रकाशित भेल।

साक्षात्कारक विविध रूप 'समय-साल' द्वैमासिक पत्रिकाक स्वरूपकेँ बेस मुखर बनौलक आ मैथिलीक पाठककेँ मैथिली पत्रकारिताक की तेवर होयबाक चाही से अवगत करौलक। हमरा सम्पादनमे पूर्वोत्तर मैथिल, गौहाटीक अंक सभ सेहो साक्षात्कारक कारणे बेस ख्याति प्राप्त कयलक। एहि सम्बन्धमे मैथिलीक 'एक्टीभीस्ट' डॉ. **जयकान्त मिश्र** आ मिथिला राज्यक अभियानी पं. ताराकान्त झाक कहब छलनि जे अपन बेबाक बात कहबाक सभसँ उपयुक्त माध्यम साक्षात्कारे होइत छैक। संयोगसँ एहि दुनू विराट व्यक्तित्वक साक्षात्कार लेबाक संयोग हमरा प्राप्त भेल अछि। मैथिलीमे आब तँ कैक टा साक्षात्कार संग्रह आयल अछि जाहिमे हमरा सभसँ बेसी आकृष्ट कयलक **'अक्षर-अक्षर अमृत'** जाहिमे मैथिल व्यक्तित्व, मैथिलीक स्थिति, समसामयिक विषय-वस्तु सहित अनेक मार्मिक, अन्वेषणीय प्रस्तुतिकरण, जे इतिहासक संग चलैत अछि, आकर्षित करैत छैक। प्रायः पं. सुधांशु 'शेखर' चौधरीक अनेक साक्षात्कारक पहिल संग्रह **'साक्षात्कारक दर्पणमे सुधांशु शेखर चौधरी'** हमरे सम्पादनमे प्रकाशित भेल अछि। आदरणीय ताराकान्त झा जीसँ आग्रह कयलियनि जे 'मिथिला राज्य अभियान' पर हिन्दुस्तान दैनिकमे साक्षात्कार प्रकाशित भेल अछि तकरा प्रकाशित कयल जाय। ओ हमर आग्रह माननलि आ ओहिमे मिथिलाक राजनेता, समाजसेवी, विद्वत्जन, मैथिल 'एक्टीभीस्ट' सहित आन वर्गक विचारक, कृषक, सामान्यजनक लगभग तीन सय साक्षात्कार **अभिमत** नामसँ हमरे सम्पादनमे हिन्दीमे प्रकाशित भेल।

अर्थात हमर कहबाक तात्पर्य ई अछि जे मैथिलीमे सेहो आब साक्षात्कार स्वतंत्र विधाक रूपमे पचास वर्षक प्रायः अपन इतिहास बना लेलक अछि तँ कहल जा सकैछ जे आब एहू विषयपर विचार-विमर्श होयबाक चाही। पता चलल अछि जे श्री अजित आजाद मैथिलीमे कोनो योजनाक अन्तर्गत पत्रकारिता पर पोथी लीखि रहल छथि। आशा अछि जे ओ एहि बिन्दुपर ध्यान देताह।

प्रस्तुत साक्षात्कार स्वयं हम अपने लेने छी साक्षात्कार लेबाक अनुभवक कारणे। देखी सुतरैत अछि की नहि। पाठके कहताह। हँ, बहुत प्रश्न एहिमे एहि कारणे नहि कयल गेल अछि जे हम आन ठाम लीखि चुकल छी। ओना हमर आदति अछि जे एक बातकेँ कैक बेर दोहराबी जाहिसँ कि लोक ओ बेर-बेर पढ़य। मुदा एहिमे किछु कंजूसी कयल गेल अछि तथापि किछु तँ आबिये गेल अछि आ किछु जानि बुझि कऽ छोड़ि देल गेल अछि जे ओ 'बात-बातपर बात' शृंखलामे आयत।

एकटा निवेदन जे सभ पत्र-पत्रिकामे एकटा साक्षात्कार अवश्य राखल जाय। ई दर्पण जकाँ लगैत छैक। मैथिली पत्रकारिताक विषयमे आर की कही?

16/9/2021 **–शरदिन्दु चौधरी**
(वृहस्पति)

साक्षात्कार

आइ हम एकटा एहन व्यक्तिक साक्षात्कार प्रस्तुत कऽ रहल छी जे ने तँ साहित्यकार छथि, ने नेता आ ने अभिनेता। ई ने तँ शिक्षाविद् छथि आ ने वैज्ञानिक। सत्य पूछू तँ ई अपनाकेँ एकटा सेवक मात्र मानैत छथि, किएक तँ जतऽ ई रहैत छथि अपन सेवा दऽ कऽ लोककेँ सहयोग करैत छथि आ एही क्रममे जे किछु उपार्जन भऽ जाइत छनि ताहिसँ अपन आ अपन परिवारक भरण-पोषण करैत छथि। हिनका विषयमे कैक टा धारणा छैक-ई जिद्दी छथि, घमंडी छथि, ककरो विषयमे किछु सँ किछु बजैत छथि, लिखैत छथि, मतलब ई जे हिनका बारिये कऽ राखल जाय, सैह नीक।

दोसर दिस हिनक व्यक्तित्वक जँ आकलन कयल जायत तँ एकटा फूटल घैल जकाँ छथि जे घर-बाहर हुनू ठाम एके जकाँ देखबामे अओताह, जे बजताह से करताह आ वैह लिखबो करताह। प्रायः एही कारणे आजुक कृत्रिम समाजमे हिनक उपेक्षा होइत रहलनि अछि मुदा हिनका, मुंहपर अनटोटल बजबाक साहस मैथिलक बड़का-बड़का तोपोंकेँ नहि होइत छनि।

ई साक्षात्कार एहि कारणे महत्वपूर्ण मानल जायत जे आइ धरि जे साक्षात्कार लेबाक पद्धति रहल अछि से एक व्यक्ति दोसर व्यक्तिक साक्षात्कार लैत अछि, मुदा एहिठाम ओ स्वयं अपन साक्षात्कार लऽ रहल छथि। अछि तँ ई कठिन काज मुदा अनेक साक्षात्कार लेबाक अनुभवक रहने देखाचाही एहि काजमे ई कतेक ठठैत छथि।

आउ, प्रस्तुत अछि एहिठाम श्री शरदिन्दु चौधरीक साक्षात्कार प्राश्निक छथि स्वयं शरदिन्दु चौधरी, हुनक छाया रूपमे–

प्रश्न– अपनेक नाम अछि शरदिन्दु जाहिसँ ई अभास होइछ जे अपनेक स्वभावमे शरद ऋतुक शीतलता एवं चन्द्रकिरणक मोहकता होयबाक चाही मुदा अधिकांश लोकक कहब छनि जे प्रत्येक बातमे अपनेक तेवर उष्मता लेने रहैछ शीतलता नहि मोहकतासँ दूर कठोरता होइछ से किएक?

❑ वाह, प्रश्न तँ बहुत नीक अछि मुदा प्रश्न पूछऽ सँ पहिने ई सोचलिऐ जे मानकताक कसौटीपर हमरे किए नापय चाहैत छी! अच्छा छोड़ू ई। हँ, ई जानि लीअऽ जे हमरामे चन्द्रमाक मोहकता आ शरदक शीतलता तँ अछिये जे सूर्यक प्रखरता सेहो अछि। बिना सूर्यक चन्द्रमाक मोहकता भैए नहि सकैछ, जेना सत्यक दर्शन बिनु असत्य भैए नहि सकैछ। चन्द्रमा जँ रातिक सौंदर्य छैक तँ सूर्य दिनक पालन-पोषण कयनिहार। छोड़ू ई सब। नाममे की राखल छैक, जँ हमरा सँ पूछल जाय जे हमर नाम की होयबाक चाहैत छल तँ हम कहब **'सेवक चौधरी'**।

प्रश्न– ई नाम अपनेकेँ अपना परिपेक्ष्यमे किएक उपयुक्त लगैए?

❑ अहाँ देखने होयबैक जे सभक नामकरण माता-पिता अथवा परिवारक श्रेष्ठजन करैत छथिन मुदा बादमे पैघ भेलापर किछु लोक अपना हिसाबें ओहिमे किछु घटाव-बढ़ाव करैत छथि आ अपन कर्मक बलें अपना द्वारा राखल नामेसँ ख्यात-प्रख्यात होइत अछि। जेना सुमन, मणिपद्म, अमर, शेखर, किरण आरसी, मधुपकेँ के नहि जनैत अछि। मुदा बाबा द्वारा राखल नाम हम बदलि लेब से साहस कहियो नहि भेल। सेवक अपन नाममे एहि कारणे नहि जोड़लहुँ जे कोनो एक क्षेत्रमे सेवा नहि दऽ सकलहुँ। जतऽ जे बुझायल अपन योगदान, यथा–घर-परिवार, सम्बन्धी समाज, संस्थादिमे अपन सेवाभाव लऽ उपस्थित होइत रहलहुँ अछि। आ जेँ कि कोनहु क्षेत्रमे विशेष योगदान नहि कऽ सकलहुँ तँ अपन नामकेँ छोटे करब उचित बुझलहुँ आ अपन मूल नाम सँ 'कुमार'केँ लोप कऽ देलिऐक। ओना सत्य पूछी तँ करैत रहलहुँ सेवे मुदा स्थिति रहल ओहि परिचारिका सन जे जीवन पर्यन्त सेवामे लागल रहैछ मुदा ओकरा कहियो सम्मानसँ नहि देखल जाइछ।

प्रश्न– अहाँक एते पैघ उत्तर सुनलहुँ, लगैए जे अपने अपन दीर्घ कार्यावधिमे समाजसँ भेटल व्यवहारसँ संतुष्ट नहि छी, की ई सत्य थीक?

❑ हे यौ, धैर्य हो सुनबाक तँ विस्तार सँ जबाब दी ने तँ फेसबुक जकाँ भांज पूरा दी, हमरा जे कही!

प्रश्न– नै-नै, अपनेकेँ जेना सुविधा हो तेना कही। हमरा कोनो धड़फड़ी नहि अछि आ ने कोनो समाचार-पत्रक संवाददातावला स्वभाव अछि जे बिनु कार्यक्रम देखने विज्ञप्तिसँ समाचार बना देबैक अथवा बिनु घटनास्थल पर गेने रिपोर्ट लीखि दऽ देबै। आइ हम मात्र अपनेक साक्षात्कारक हेतु अधिकृत छी। तेँ अपनेकेँ जे जे कहबाक होअय, खुलि कऽ कहल जाय।

❑ आयँ यौ, अहाँ पुछलहुँ अछि जे समाजिक व्यवहारसँ हम संतुष्ट नहि छी, सैह ने।

प्रश्न – हँ-हँ, सैह।

❑ तँ निश्चिन्त सँ सूनब, अकबकायब नहि (कने बिलमैत)।

अहाँ कोन समाजक बात करैत छी? गाम-घर, शहर-प्रदेश, देश-विदेशक समाजक, की बुद्धिजीवी समाज, अनपढ़, खेतिहर समाज, संस्थाजीवी समाज आ कि व्यापारी समाज, पत्रकार समाज कि साहित्यकार समाज, शिक्षासेवी समाज आ कि विद्यार्थी समाज, नोकरीहारा आ कि बेरोजगार समाज, कोन समाज? सत्य पूछू तँ समाज नामक शब्दकेँ ओहिना लोप कऽ देल जयबाक चाही जेना हम अपन नामसँ 'कुमार' के निपत्ता कऽ देलिऐक। (श्री चौधरी कने रुकैत छथि आ फेर बाजऽ लगैत छथि)–आयँ यौ, जाहि बुद्धिजीवी समाजक नैयायिक, जिनका नामक आगाँ न्यायमूर्ति लगाओल जाइत छनि से 'कोरोना'क भयसँ अपन पिताक शवकेँ अस्पतालसँ लेबा सँ इन्कार कऽ देलनि, दैनिक हिन्दुस्तानक पूर्व सम्पादक सुकान्त सोमक निधनक अवसर पर एक्कोटा पत्रकार झांकी मारय नहि आयल, बिनु सोचने-बुझने कोरोनासँ हुनक मृत्यु भेलनि से छापि सुर्खी मे आयल से मूढ़ समाज आ कि ओ साहित्यकार समाज जे राजमोहन झा, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', सुकान्त सोमक अखाढ़ा पर रगड़ा खा कऽ पिट्ठा सन बनि गेल आ हुनका एकटा काठी देबऽ काल उपस्थित नहि भेल से समाज। कोन समाज? गाम-घरक खेत-पथार बेचि बेटा-भातिजकेँ हाकिम अफसर बनौनिहार ओ समाज जे गाममे काहि काटि रहल अछि ओ तकर खोज-खबरि नहि लेनिहार समाज आ कि माय-बापकेँ बाँटि अलग कयनिहार समाज। हे यौ आइ बेटा-बेटी, भाइ-भतिजा, देयादवाद, सर कुटुम्ब, अड़ोसी-पड़ोसी जतेक सम्बन्ध अछि टाका आ धन सँ बनैत अछि। सभ सम्बन्धमे लाभ-हानि देखिकऽ निर्णय कयल जाइत अछि-करुणा, सहयोग, भाइचारा, प्रेमक कारणे नहि तँ हमरा विचारें समाजक जे साबिकक स्वरूप

रहैक ताहिपर विचार नहि कऽ आजुक परिवेशमे सोचल जयबाक चाही।

आब हम अबैत छी अहाँक प्रश्न पर। अहाँ पूछैत छी जे अहाँ जतेक सेवा कयलिऐक ताहिपर समाज ध्यान नहि देलक आ हम अपनाकेँ उपेक्षित अनुभव करैत रहलहुँ। एतऽ स्पष्ट करय चाहैत छी जे उपेक्षित ओ अनुभव करैत अछि जे अपेक्षा रखैत अछि। हम ककरो सँ अपेक्ष नहि करैत छी तँ दुःख वा आक्रोश किएक होयत। हँ, हमर जीवनमे अनेक 'मेन्टर्स' अयलाह जे हमरा डूबबासँ बेर-बेर बचबैत रहलाह अछि, ताहिमे **श्री मन्त्रेश्वर झा** जी, **स्व. ताराकान्त झा** जी एवं **डा. बासुकीनाथ झा** जी प्रमुख छथि।

हमर जीवनक अधिकांश समय अपन बनाओल रास्तापर चलल अछि। हमरा प्रसन्नता अछि जे हमरा संग चलि, अथवा हमर परामर्श पर चलि सैकड़ो युवा दनदना रहल छथि। हम एहि वर्गकेँ जतेक समय देलिऐक अछि ततेक जे अपन व्यवसाय पर दितिऐक तँ आइ सेठक पांतीमे ठाढ़ रहितहुँ। हमर ई कमाइ जे हमरा हृदयमे अछि तिजोरी मे नहि तकरा के छीनि सकैत अछि। मैथिल सोझांमे मधुर बजैत अछि, मधुर खयबा लेल मीलो लोटा लऽ कऽ जाइत अछि, जतऽ मधु भेंटैत छैक ततऽ चिपकि जाइत अछि, मधु सठैत दोसर डारिपर दौड़ि जाइत अछि। की हमरा कहियो एहि प्रकारें दौड़ैत देखलहुँ अछि कतहु! तँ पहिने कहि देलहुँ जे उपेक्षाक आभास तखन होइछ जखन अपेक्षा रखैत अछि लोक। जँ हम चाहितहुँ तँ एकटा गोल बना कऽ, दूधारी तरुआरि बनि, भांट जकाँ 'हँ मे हँ' मिला कऽ पद आ पाइ नहि अर्जन करितहुँ जेना मैथिली आ मिथिलाक नामपर कयल जा रहल छैक। हे यौ, ई जे शेखर प्रकाशन देखैत छिऐक से हमर खून-पसेनाक दमपर ठाढ़ छैक, आ एकर महत्व की छैक से भाषा संस्थान, मैसूर; साहित्य अकादमी, दिल्ली आ मैथिली अकादमी पटना सँ पुछियौक जा कऽ। मैथिलीक विद्यार्थी वर्गकेँ पुछियौक!

प्रश्न– अपने कने आक्रोशमे आबि गेलिऐक अछि तँ कने अपनेकेँ दोसर दिस लऽ चलैत छी.......?

❑ एतवा देरमे ई बूझल नहि भेल जे हमरा अहाँ जेना चरिया देब तेना हम बहकि जायब। जे पूछबाक हो साफ-साफ पूछू आ ठाँहि-पठाँहि उत्तर लियऽ।

प्रश्न– अपनेक वक्तव्यसँ लगैए जे विविध प्रकारक काज अपने कएलिऐक अछि मुदा कोनो संस्था अपनेक सम्मान नहि

कयलक से दुःख प्रायः अपनेक मानसमे घुरिया रहल अछि, की हम स्पष्ट छी ने?

❑ हँ (अपन स्वभावक विपरित हँसैत) यौ! शरदिन्दु चौधरी की चिज छैक लोक नहिये बुझि सकतै प्रायः। आ पुरस्कार-सम्मानक बात करैत छी हमरा संदर्भमे तँ हँसी लागि गेल। पुरस्कार आ सम्मानक आकांक्षी ओ होइत अछि जकरा ई लगैत छैक जे ई भेटने हमर मान-सम्मान बढ़ि जायत, हमर नाम इतिहासमे दर्ज भऽ जायत, हम एकटा विशिष्ट लोकक श्रेणीमे परिगणित होयब, किछु द्रव्य लाभ सेहो होयत आदि-आदि। (किछु रुकैत) हमरा जनैत ई सभ एकटा एहन प्रक्रिया आजुक दिनमे भऽ गेल अछि जकर कोनो मोजर नहि छैक। जेना गवर्नर, मंत्री सभक नाम लोक याद नहि रखैत अछि तहिना सम्मानित लोककेँ स्मरण नहि रखैत अछि।

प्रश्न– एकर की कारण छैक, कने फरिछा कऽ कहबै?

❑ कारण बहुत छैक मुदा एकटा बात बुझि लियऽ जे आब पुरस्कार होअय की सम्मान, देल नहि जाइछ अपितु पुरस्कार लेनिहार सेहो विभिन्न तरहें ओहिमे शामिल रहैत अछि। कहल जाइछ जे कोनो वस्तु, सम्पत्ति, सत्ता प्राप्त करबा लेल जेना साम, दाम, दंड, भेद आदि नीति पर लोक चलैत अछि, तहिना ईहो प्राप्त करबा लेल मैथिलीक बड़का-बड़का विद्वान जे एहि सभसँ ऊपर उठि गेल अछि सेहो छड़पान दैत फिरैत छथि। जकरा ज्ञान नहि से सभ जूरी बनैत अछि, विद्वान लोकनि चकभाउर दैत फिरैत छथि।

प्रश्न– एतेक विसंगति छैक ओहिमे तँ सुधार किएक नहि कयल जाइत छैक?

❑ अहाँ सुधारक बात करैत छी, के करतै सुधार। जखन सौंसे इनारेमे भांग घोरल छैक तँ जे हेबाक छै से भऽ रहल छैक। ने अपन वचन पर क्यो कायम रहैत अछि आ ने अनर्गल क्रियाकलाप सँ बाज अबैत अछि, देखैत चलू तमाशा। मैथिल ईहो नहि सोचैत अछि जे आन समाजक लोक की सोचत एहि छिच्छापर, स्तरहीनतापर।

प्रश्न– अहाँक विषयमे कहल जाइछ जे अहाँ सदिखन आलोचने पर केन्द्रित रहैत छी, ककरो विषयमे किछु लीखि दैत छिऐक, एना किएक?

❑ हे यौ, हमरा मैथिलीक विद्वान, समाजसेवी, संस्था सभ पर अगाध श्रद्धा छल। युवावस्थासँ धीरे-धीरे सभसँ जुड़य लगलहुँ। जतऽ जे अढ़ायल जाय, करय लगलहुँ। मुदा जेना-जेना आगाँ बढ़ैत गेलहुँ तेना-तेना बुझय लगलहुँ जे सभठाम लोक 'self exposure' लेल अपस्यांत अछि, मैथिली-मिथिला-मैथिल तँ माध्यम मात्र छैक आ संस्था सैरगाह। एकर बाद तँ बुझू जे सोझे जमीनपर खसलहुँ हम। मुदा हमहू तँ ओहने, भागब किए से सोचि स्वर उठौनाइ शुरू कयलहुँ से अनवरत चलि रहल अछि। हँ, हम आधारहीन बात नहि करैत छी से जानि लियऽ।

आब अहीं कहू जे एकटा बहुत पैघ विद्वान अपन पत्रिकाक सम्पादकीयमे लिखलनि जे मैथिलीक सभसँ पैघ पुरस्कार कीनल जाइछ। भयभीत भऽ आगाँ हुनके ओ पुरस्कार देबाक घोषणा भेलैक। एहि स्थितिमे हुनका की चाहैत छलनि जे जकरापर आंगुर उठौलथिन से ग्रहण नहि करितथि। एहिसँ ने हुनकर विद्वता, क्षमतापर प्रभाव पड़ितनि आ ने पुरस्कार राशि सँ आर्थिक स्थितिमे सुधार होइतनि। अपितु हुनकर छवि मैथिलमे स्वच्छ-धवल भऽ जइतनि, मुदा ओ सगर्व अलंकृत भऽ ओही वर्गमे शामिल भऽ गेलाह जकर विरोध ओ संपादकीय सन पवित्र स्तंभमे कयने छलाह।

प्रश्न– जँ मानि लियऽ जे कोनो संस्था अपनेकेँ सम्मानित करय वा पुरस्कृत करबाक घोषणा करत तँ 'अहाँ की करबै'?

❑ वैह करबै जे करिया कक्का पोथीक पात्र कहताह।

प्रश्न– अर्थात.........

❑ कोनहु पुरस्कार-सम्मान स्वीकार नहि करबैक ताजिनगी। ऐ एहि कारणे जे शरदिन्दु चौधरी देबाक लेल जन्म लेने छैक। समाज सँ हम जतेक लैत छी ताहिसँ बेसी देबाक प्रयत्न रहैत अछि, से विभिन्न तरहें। हम जँ कोनो कर्जो लैत छी, कोनो काज लेल आ हमरासँ बेसी खगल लोक मांग करैत अछि तँ ओ ओकरा दऽ दैत छिऐक। कैकबेर एहेन स्थिति आयल अछि।

आ जहाँ धरि पुरस्कार-सम्मानक बात छैक तँ आब ओ 'oblige' करय लेल देल जाइत छैक सम्मान स्वरूप नहि। एकरा एना बूझि लियऽ जे किनको पुरस्कार भेटैत छनि तँ कैक गोटे

बारेआम बजैत भेटताह-हम दिया देलियनि, आ पुरस्कार-सम्मान लेनिहार ओकर प्रतिकार करैत नहि भेटताह। हुनका ठप्पा लागि गेलनि ओहने सन जेना अन्हरा......। आब अहीं कहू ओहिठाम रचनाक स्तर, साहित्य सेवा वा समाज सेवाक की मोल रहि जाइत छैक। हे, एक गोटा हमरा पुरस्कार प्रक्रियाक स्तरहीनताक गप्पक क्रममे एहिमे लागल लोक सभकेँ माय-बहिनकेँ गारि पढ़ैत कहलनि जे कोनो हालतिमे साहित्य अकादमिये वा कोनो पुरस्कार हम नहि लेब, मुदा लगले छओ मासक अभ्यंतर पुरस्कार ग्रहण कऽ गदगद भऽ गेलाह। हम पूछैत छी एहिसँ हुनकर क्षमता, विद्वतामे कतेक अभिवृद्धि भेलनि। तखन अनेरे अर्र-दर्र बजने की लाभ! सेटिंग करैत रहू आ गारियो पढ़ैत चलू।

प्रश्न– आखिर बुद्धिजीवी-साहित्यकार लोकनि एहन चरित्र किएक बना लेलनि अछि?

❑ ई तँ ओहन द्वैध चरित्र आ चालिवला लोकसभ सँ पुछबनि, लिखैत-लिखैत तँ हम थाकि गेलहुँ मुदा भेल की, लाखोक पूँजी लगाकऽ माछी मारैत रहैत छी! अपन लेखनसँ अपने पेटपर लात मारैत छी। अहीं कहू एहन लोक भेटत क्यो?

प्रश्न– वर्तमान मैथिलीक स्थितिपर किछु कहबै!

❑ किएक नहि, युवा वर्ग दीवाना अछि रोजगारक संभावनासँ, प्रौढ़ वर्ग इतिहास (अपन टा) गढ़बा लेल अपस्यांत अछि, से जेना हो, स्थापित रचनाकार प्रशंसा लोढ़बामे आनन्दक अनुभव करैत छथि– आलोचना कयनिहार (रचनाक)केँ अपन शत्रु मानैत छथि, संस्था सभ मैथिलीकेँ दूहि-दूहि अपन-अपन (पदाधिकारी लोकनि) प्रचार-प्रसार ओ प्रभाव लेल निस्सन डेग उठबैत छथि मिथिला-मैथिलीक नाम लऽ कऽ, बस यैह हाल छैक सभ तरि।

प्रश्न– कोनो एक संस्था जे अहाँकेँ नीक लगैत हो, ओकर कोनो एक पदाधिकारी जे अहाँकेँ मस्तिष्क पर हठात् आबि जाइत होथि बिना टोप-टहंकारक!

❑ पटना स्थित चेतना समितिक अवदानकेँ कहियो नकारल नहि जा सकैछ। हमर युवावस्थामे गजेन्द्र नारायण चौधरी बेस प्रभावित कयलनि आ एमहर बीस वर्षक अन्तरालमे श्री विवेकानन्द झा;

सर्वसुलभ, मुख्यमंत्री सँ लऽ कऽ सामान्यजन धरि पहुँच राखयवला, अपन शिकाइत सुनयवला, हरदम किछु करबाक हेतु तत्पर रहयवला, अपन टाका-समय देबऽवला निरंतर सेवक जकाँ ठाढ़ रहनिहार, मात्र फोटो खिंचयबाक लोभ आ किछु हल्लुक गप्पमे शामिल रहयवाला आदति छोड़ि देथि तँ सर्वोत्तम व्यक्ति, सर्वोत्तम संगठनकर्ता ओ समाजसेवी।

प्रश्न– मैथिली साहित्यमे अहाँकेँ के-के प्रभावित कयलनि, अपन लेखनसँ, अपन व्यक्तित्वसँ, व्यवहारसँ।

❑ बहुत पैघ फेहरिस्त भऽ जायत। पढ़ने-बहुत गोटेकेँ छियनि। दस वर्षक वयससँ अनेक दिग्गज लोकनिकेँ देखने छियनि, हुनक टहल-टिकोरा कयने छियनि। सभक पाण्डुलिपि देखने छियनि, पढ़ने छियनि आ बहुत गोटेक रचनाक संपादनक सौभाग्य सेहो भेटल अछि।

किरणजी, मधुपजी, सुमनजी, मणिपद्मजी, जयकान्त मिश्रजी, प्रभास जी, गुंजनजी, मन्त्रेश्वरजी, अमरजी, जीवकान्त जी गोविन्द बाबू, बासुकी बाबू, प्रवासीजी, राजमोहन जी, बच्चा ठाकुर जी, भीम बाबू, रामदेव बाबू, हमर पिता शेखरजी, हेतुकर बाबू सन लोक अदृश्य गुरुक रूपमे हमर ह्दयमे खचित छथि जनिकर गुण, पारदर्शिता ओ व्यवहारक कोनो ने कोनो पक्ष हम अपन जीवनमे अपनयबाक प्रयत्न कयलहुँ आ हिनका लोकनिक जे राजनीतिक सोच ओ व्यवहारिक कमजोर पक्ष रहनि अथवा छनि ताहिसँ दूर रहलहुँ। एकर कारण ई अछि जे हर व्यक्तिमे गुण-दोष दुनू रहैत छैक, अहाँ पर निर्भर अछि जे अहाँ कोन पक्षक अनुशरण करू।

हँ, एहिठाम हम ईहो कहि दी जे ई सभ गोटे हमर अग्रज भेलाह। अपन श्रेष्ठ, समवयस्क अथवा अनुज लोकनिसँ सेहो हम बहुत प्रभावित होइत छी आ किछु ने किछु सीखबाक प्रयत्न करैत छी। श्री अशोक, श्री शिवशंकर श्रीनिवास, उषाकिरण खान, शेफालिका वर्मा, श्यामानन्द चौधरी, रंगनाथ दिवाकरजीक लेखनसँ बढ़ि व्यवहारसँ सेहो चमत्कृत रहलहुँ अछि। कमलमोहन चुन्नू, अजित आजाद, अशोक मेहता, सभ तरहें प्रभावित करैत छथि। सुरेन्द्र राउतक मेहनति आ सफलता, रमण कुमार झाक क्षमता आ व्यवहार प्रेरित

करैत अछि। मुकुन्द मयंक आ बालमुकुन्द सन युवकमे भविष्य देखाइत अछि। कतेक नाम कहू। जतेक लोक हमरा खसयबाक प्रयत्न कयलनि ताहिसँ बेसी हर आयुक लोकक शुभकामना हमरा प्रेरित करैत रहल अछि।

अच्छा आब छोड़ू, बहुत पैघ बैसकी भऽ गेल, फेर दोसर बैसकी मे भेंट होयत।

....

दोसर दिन फेरसँ बैसकी होइत अछि। प्रश्नसँ साक्षात आ छायाक स्वरूप धीरे-धीरे स्थिर होइत अछि। प्रश्नक दौर प्रारंभ होइत अछि।

प्रश्न– मैथिली पत्रकारिताक विषयमे किछु खास कहबै। ओना एहि मादे हम अहाँक आलेख सभ पढ़ने छी जाहिमे पत्रकारितासँ लऽ कऽ अनेक बात उठौने छिऐक। किछु नव कहियौ?

❑ नव तुरत पुरान भऽ जाइत छैक। नवक इंतजार फेर प्रारंभ भऽ जाइत छैक। की कहू! हँ, पत्रकारिता माने आब बलिदान बूझल जाय लगलैक अछि। क्यो कहैत छथि–'हमरा पत्रिका निकालबामे आठ-दस लाख खर्च भऽ गेल। युवा ललित नारायण (मिथिला मिरर) एही वयसमे रिर्पोटिंगक क्रममे कहैत छथि-हम हड्डी गला रहल छी।' जखन कि हमरा हिसाबें एखने सँ प्रोफेशनल पत्रकार भऽ गेलाह अछि ओ। मैथिलमे जे क्षमता छैक पत्रकारिता विधा क्रिया-प्रक्रियाकेँ आत्मसात कऽ ओकरा शब्दक माध्यमसँ अभिव्यक्ति देबाक से हमरा जनैत ताहिसँ पत्रकारिता जगतमे ओकरा सर्वोच्च स्थान भेटि सकैत छलैक। एहि पेशामे ओ पचास प्रतिशतसँ बेसी कार्यरत सेहो छथि मुदा पिछलगुआ बनबाक प्रवृति आ शोषण सहबाक अन्तहीन स्वभाव ओकर तेवर, प्रखरता आ क्षमताकेँ कुंठित कऽ दैत छैक। परिणाम ई होइत छैक जे ओ पत्रकारिताक 'हॉट सीट' पर कहियो नहि पहुँचि पबैत अछि। ओकर गुण आ क्षमता अनकर शब्द बनि कऽ अभिव्यक्त होइत छैक। मुदा जे चतुर आ व्यापारी प्रवृतिक पत्रकार छथि से छाल्हि काटि कात-करोट सँ निकलि जाइत छथि आ सरकारी तथा मैथिल संस्था ओहने-ओहने पत्रकार सभकेँ पाग-डोपटा दऽ सम्मानित करैत अछि जखनि की हुनक योगदान मिथिला-मैथिलीक प्रति नहि रहैत छनि। हँ, ओ मैथिल संस्थाक

जुनूनी पत्रकारकेँ, जे मैथिली पत्र-पत्रिका निकालैत अछि, बेचैत अछि अपन जीवनक कीमती समय दैत अछि तकर नामो लेलासँ हिचकिचाइत छथि, कारण ओो जे लिखत ताहिमे मैथिल व्यैक्ति, मैथिल संस्थाक गुण-दोषक चर्चा करत। आन भाषाक पत्र-पत्रिकामे उपलब्धिक चर्च रहैत छैक, तिलकोरक तरुआक सुगंधक, मखानक मालाक आ पाग-डोपटाक चर्च रहैत छैक, गुण-दोषक नहि। आ बुझले होयत '.......मांड़े तृप्त।' संस्था हो कि पत्रकार, पाठक हो कि मिथिला भाषी समुदाय ककरो ई नहि बुझाइत छैक जे विनु मातृभाषाक तेज स्वरक चोट कयने क्षेत्रक विकास नहि होइत छैक। मुदा एतऽ तऽ स्वर उठयबाक प्रवृतिकेँ विधवा विलाप बूझल जाइत छैक, अनुनय विनयकेँ दायित्व बूझल जाइत छैक, कोनो ने कोनो पार्टीक नेताक चरणामृत पीबि गद्दी आ जोगारसँ अर्थ संग्रहक प्रवृति छैक ततऽ अपन स्वरक, अपन समाजक विकासक सोच कतऽ सँ अयतैक, अपन पाँचटा परिवारक सदस्यक लेल अनैतिक रूपें करोड़ो कमायब, अनका भीखमंगा बूझब जतऽ प्रवृति बनि गेल हो ओतऽ स्वाभीमान आ मानवता की छैक से कहियो स्वीकारल नहि जा सकैत अछि, मातृभाषाक पत्रकारिताक मोल आ महत्व एहन लोकक माथक ऊपर सँ निकलि जाइत छैक।

पत्रकारिताक विषयमे हम बहुत किछु लीखने छी से पढ़ि कऽ बूझि जायब जे पत्रकारिता की होइछ, पत्रकार केहन होयबाक चाही, प्रबंधन आ सम्पादन दुनू दू वस्तु छैक, लोक रूचि आ पत्र-पत्रिकाक सम्बंध की होयबाक चाही, कोनो वस्तु-विषयकेँ कोना पाठकक बीच राखल जाय जे पाठकपर ओकर प्रभाव पड़ैक, से सभ बात हम स्पष्ट रूपें लिखने छी आ ओहि मान्यतापर तीस वर्षसँ अडिग छी से जानि लियऽ।

प्रश्न– अपने बहुत गोटेक साक्षात्कार लेने छियनि? मैथिलीमे साक्षात्कार, वंचित समाजपर लेखन-बहसपर किछु कहबैक?

❑ उत्तर पैघ होयत, धैर्य सँ सूनब। साक्षात्कार एकटा खास विधा अछि जाहिसँ कोनो व्यक्तिक सोच-विचार ओ व्यक्तित्वक विभिन्न आयामसँ लोक अवगत होइत अछि। मैथिलीमे एखन धरि कैकटा साक्षात्कारक संग्रह सेहो उपलब्ध अछि जाहिमे अनेक विद्वान, साहित्यकार,

सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्रक लोक, कलाकार, प्राध्यापक, इंजीनियर, कृषक आदिक साक्षात्कारक अपन-अपन महत्व अछि। पत्र-पत्रिकामे सेहो अत्यधिक साक्षात्कार अबैत रहल अछि।

आजुक युगमे सभसँ बेसी साक्षात्कार राजनीतिक नेतालोकनिक लेल जाइत अछि किएक तँ कोनो एहन क्षेत्र नहि बांचि गेल अछि जे राजनीतिक परिधिमे नहि अबैत हो आ निर्णयक आधार राजनीति सँ प्रेरित नहि हो। सभठाम दल, गुट, क्षेत्रीयता, गोत्र-मूल, जाति-सम्प्रदायवला सोच प्रभावी अछि। एहना स्थितिमे एकटा एहन वर्ग उपस्थित भऽ गेल अछि जे क्रमे-क्रमे ओहन वर्गकेँ 'टारगेट' कऽ अपन गोटी लाल करैत अछि। हमर कहबाक अभिप्राय: अछि 'प्रोफेशनल' वर्ग। एकर नजरि समाज, राजनीति, जाति-सम्प्रदाय सहित ओहन गोल-गुट लग पहुँचबाक प्रयास करैत अछि जकर महत्वाकांक्षा बहुत पैघ रहैत छैक मुदा सामर्थ्य नगण्य। ई समाजक नव प्रजाति अछि जे चिक्कन-चुनमुन बाट देखबैत अछि आ किछु हद धरि पांजमे आयल लोक-गुटकेँ सफलता दिया अपन आर्थिक हितसाधन करैत अछि।

हम पूर्वमे कहि आयल छी जे ई लोकनि एकटा खास जेनेटिक (जाति-सम्प्रदायक नहि) ऊर्जासँ संचालित होइत छथि आ मात्र अपन अभ्युन्नतिक मार्ग बनबैत छथि कोनो पछुआयल लोक-समाजक नहि। प्रशांत-किशोर एहि 'जीन'क उपज बनि अग्रसर छथि आ सफल छथि से हम सभ देखि रहल छी।

मैथिली भाषा-साहित्यक मध्य सेहो एकटा 'जीन' एहि प्रकारें अपन प्रसार करबामे लागल अछि। ओकरा जन-सामान्यसँ कोनो सरोकार नहि छैक अपितु ए.सी.मे बैसि सर्वहारा ओ जनसामान्यक बात करैत अछि, अपन व्यवसाय चलबैत अछि। सभसँ आश्चर्य तखन लगैत अछि जे एहू वर्गकेँ ब्राह्मणे 'लीड' करैत अछि आ ओहन दलित-पिछड़ा वर्गकेँ ओहिमे सम्मिलित करैत अछि जे स्वयं प्रतिभावान अछि आ कतहु ठटि सकैत अछि। होयबाक चाही ई जे वंचित समाजक जे पछुआयल लोक अछि ताहिमे सँ प्रतिभावानकेँ खराजि सोझां आनी जकरामे अपन समाजक प्रति मात्सर्य हो। मुदा एना नहि भेल आ ने भऽ रहल अछि।

हम कैक वर्षसँ ई खेल देखि रहल छी, फेसबुक, टी.वी. चैनेलपर सुनि रहल छी। कोना प्रपंचक जाल फेकि प्रोफेशनली वंचित, अशिक्षित लोककेँ फंसा रहल अछि, सभ बूझि रहल छी। एहि कोटिक लोक अपन वित्तीय संसाधन बढ़यबा लेल ई डेग उठा रहल अछि।

हम अपन चालीस वर्षीय सामाजिक-भाषिक जीवनमे ककरोसँ जाति नहि पुछैत छियैक। हमर प्रेसमे मशीनमैन मुसलमान आ शेष 10 टा कर्मचारी वंचित, विपन्न आ पछुआयल वर्गक लोक छल एकोटा ब्राह्मण नहि। आइयो हमर कम्पोजीटर कहार अछि आ 70% सँ बेसी शिष्य आ विद्यार्थी वंचित समाजसँ हमरा लग अबैत अछि जकरासँ हम जाति नहि पुछैत छिऐक, मुदा ई हम कहियो नहि बजलहुँ। मुदा जाहि घरमे अजाति मैथिली अकादमीक निदेशक लेल घरमे फराक कप-वर्तन सुरक्षित रहैछ तेहने-तेहने लोकक मुँहसँ बेसी आँच लगयबाक काज कयल जाइत अछि।

हम साक्षात्कारक चर्च पूर्वमे कऽ चुकल छी। आजुक सेमीनार वा वेबिनार किछु हद धरि एकरे रूप सन अछि जाहिमे क्यो अपन विचार रखैत अछि आ बादमे प्रश्नोत्तरक क्रम चलैत अछि।

स्वागत अछि एहि विधाक मुदा सोचबाक विषय ईहो थिक जे एकरा सहरजमीन पर उतारयवला कोनो एक व्यक्ति अछि जे अपना कान्हपर ई भार उठाबय? उत्तर 'नहि' भेटत। कारण जे काज करबाक अछि से सहज नहि, अत्यन्त कठिन अछि जाहिमे क्षमता चाही, उर्जा चाही, संसाधन चाही आ चाही एकाग्रचित्तता। मुदा जतऽ अर्थ प्रधान हो ओतऽ ई व्यवसाय बनि जाइत छैक आ व्यवसायसँ अडाणी-अम्बानी बनैत छैक, भाषा नहि बनैत छैक। साक्षात्कार, वेविनार आदि फुस्स भऽ जाइत छैक।

प्रश्न– अच्छा ई कहल जाय जे अपनेक लेखनमे जे साहित्य अछि ताहि विषय-वस्तुक समाज पर असर पड़लैक?

❑ सभसँ पहिने ई कहि दी जे हम बहुत कम लीखने छी आ जे लीखने छी से साहित्य सँ इतरक विषय छैक। हमर मूल लेखन पत्रकारिता रहल अछि आ ओकरे प्रतिरूपमे हमर व्यंग्य संग्रह सभ आयल जे हिन्दुस्तान दैनिक (अधिकांश)मे आ मैथिलीक विभिन्न

पत्र-पत्रिकामे छपल अछि। ओ संग्रह सभ 500 प्रति छपल छल, जाहिमे प्रारंभिक तीन टा, चारि टा कतहु होयत। शेष दू टा बीस-पचीस टा होयत। हमर एखन धरि जे दू टा संस्मरणात्मक पोथी आयल सेहो पत्रकारितेक काज कयलक ओहो सभ प्रायः किछुये प्रति होयत।

हम पूर्वमे कहने छी जे बहुत अग्रजक हम किछु बातकेँ अपन जीवनमे लेने छी। आदरणीय जीवकान्त जी एकटा आलेख पठौलनि जाहिमे हुनक ई पांती हमरा बेस प्रभावित कयलक-'सभ साहित्यकारकेँ आब पत्रकारक नजरिसँ विषय-वस्तुक चयन करबाक चाही।' ई पांती पत्रकारिताक महत्वकेँ रेखांकित करैत अछि। समाजपर ओकर प्रभाव ओहिना पड़तैक जेना पत्रकारक लीखल शब्दकेँ लोक सहज रूपें कहि उठैत छैक-ई बात फल्लां अखबारमे पढ़लिऐक, अहाँ पढ़लहुँ की नहि! एना लिखने छै अर्थात ओ रिर्पोटिंग ओकरा पर प्रभाव छोड़लकैक तँ ओ अपना बीचक लोकमे बाजल। आब सोचू, जँ ओ ई बात मैथिली अखबारमे पढ़ने रहितैक तँ ओकर अन्तरमे ओ बात आर दूर धरि चलि जइतैक की नहि।

हमर जतेक व्यंग्य रचना अछि सभटा पत्रकारिताक स्वादमे चलैत अछि आ आदरणीय भीमनाथ झाजी जकाँ स्पष्ट, रोचक ओ प्रेरक होइत अछि, पंडित हीरानन्द झा 'शास्त्री' (पूर्व सम्पादक, दैनिक आर्यावर्त)क स्वर जकाँ कटाक्ष करैत अछि तँ पं. दीनानाथ झा (पूर्व सम्पादक, इन्डियन नेशन) जकाँ मुद्दा बना कऽ आगाँक बात कहैत अछि, जे आजुक समाजमे स्पष्टतः आंकल जा सकैत अछि। हमर एकटा छोट रचना 'बुचकट' जे दस पूर्व छपल अछि से पढ़ि लेब आ ओही संदर्भमे आजुक लोकक पहिरन-ओढ़न देखब तँ देखब जे एकटा पत्रकार भविष्यक दृश्यकेँ पहिने कोना देखैत छैक। तँ हम सभठाम बजैत छी, लिखैत छी जे हम पत्रकार छी, साहित्यकार नहि। हँ, एमहर हम किछु पोथीक सम्पादन, प्रकाशन ओ लेखन अवश्य कयलहुँ अछि जकरा साहित्यक कोटिमे कथमपि नहि राखल जा सकैत अछि ओ विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा अथवा कोनो ने कोनो मैथिलीक पाठ्यक्रमक विषय-वस्तुकेँ सहज रूपमे प्रस्तुत कयल रहैत छैक। ई पोथी कैक-कैक संस्करणमे छपि रहल अछि।

प्रश्न– अपने अपनाकेँ साहित्यकार किएक नहि मानैत छी, एकर की कारण?

❑ देखू, **साहित्य** आ **साहित्यकार** ई दुनू शब्द कोनो भाषा लेल बहुत महत्व आ प्रतिष्ठाक सूचक होइत छैक, ई हम मानैत छी तेँ ई लौल नहि करैत छी। वर्तमानमे 80 प्रतिशत सँ बेसी साहित्यकार (तथाकथित)क लेखनसँ पता कऽ सकैत छी जे ओ सभ एहि दुनू शब्दक प्रतिष्ठाकेँ बढ़ा रहल छथि की घटा रहल छथि! रहल बात हमरा लेल तँ हम ओहि योग्य अपनाकेँ नहि मानैत छी आ ने अनेरे वाह-वाह, विलक्षण, शुभकामना, गोर लगै छी सर सन प्रशंसा सूचक शब्द लोढ़बाक अभ्यासी छी। जतऽ हम श्रम आ पारिश्रमिक सनक बातक मुद्दा उठबैत छी तँ साठोत्तर वयसक लोक ओकरा 'विधवा विलाप'क संज्ञा दैत छथि, अनुनय-विनय करबाक परामर्श दैत छथि, की अहाँ कहैत छी जे एहने मानसिकतावलाक बीच जा कऽ ठाढ़ होइ! जँ एहि सम्बन्धमे हमर वृहत विचार बुझबाक हो तँ हमर पहिले संग्रह-'जँ हम जनितहुँ' संग्रहक यैह शीर्षकवला व्यंग्य पढ़ि लेब, सभटा बात फरिछा जायत।

प्रश्न– आखिर ई विसंगति, स्तरहीनता एवं अयोग्यताक बोलबाला किएक बढ़ैत गेलै आ दिनानुदिन बढ़ले जा रहल छैक?

❑ एहि लेल हम सभ दोषी छी ई मानहि पड़त। हमर पूर्व पीढ़ी आ अग्रज विद्वान लोकनि एहि काजमे ओहन लोककेँ शामिल कयलथिन जे सर्वथा एहि क्षेत्र लेल अयोग्य छथि तेँ ई हाल अछि। आब अहीं कहू जकरा शाब्दिक ज्ञान नहि छैक से साहित्यकार बनय; जकरा ईहो नहि बूझल छैक जे तुलसीदासक रामायण आ चन्दा झाक रामायण दुनू फराक-फराक मैथिल लेखन छैक तकरा मैथिलीक एम.ए.क डिग्री भेटय; जकरा जीवकान्त पर पी-एच.डीक उपाधि भेटि जाइक तकरा जीवकान्तकेँ कोन पोथीपर साहित्य पुरस्कार भेटलनि से साक्षात्कारमे नहि बता सकय; मैथिली अकादमीक एहन मैथिल अध्यक्ष-सह-निदेशक बनाओल जाय जकरा मैथिलीक ज्ञान नहि होइ, ओ मात्र शिक्षा विभागक पैघ-पैघ पदाधिकारी संग फोटो खिचबा मैथिली अकादमीक पत्रिकामे तेसर पृष्ठपर प्रकाशित कराबय; पी.जी. हेड रूपमे ओहन प्राध्यापकक नियुक्ति/प्रोन्नति होइ जकरा

मात्र भी.सी. वा रजिस्ट्रारक आगाँ-पाछाँ करबाक लुरि होइ पढ़बाक-पढ़यबाक ने पलखति होइ ने अवगति; पुरस्कार-सम्मानक जूरीमे ओहन व्यक्तिकेँ राखल जाय जकरा नव पोथी अथवा पोथीक विषयसँ कोनो छुति नहि होइक; साहित्यकारक श्रेणीमे सेमिनार सभमे ओहन व्यक्तिकेँ शामिल कयल जाइन जिनका मात्र टीए. अथवा जे टाका-भेटैत हो भेटनि; आ ई परंपरा रूपमे सभ तरहक लोक (विद्वान) चुपचाप प्रश्रय दैत रहथि ततऽ अहाँ हमरा सँ एकर कारण पूछैत छी? की अहाँकेँ ई सभ नहि बूझल अछि जे धीरे-धीरे योग्यतावला, सक्षम लोक सभ कात भऽ गेलाह, अवडेरि देल गेलाह आ टाकाक लोभी आ पदक लोभी राजनीतिक सोङर, पैरवी, भाइ-भतीजा वादक बलें लोक सभठाम कमानमे आबि गेल। सभ नीक किएक नहि होइत अछि, सभ प्रकारक सुविधा किएक नहि भेटैत अछि, भ्रष्टाचार-घूसखोरी किएक बढ़ि गेल अछि अनघोल मचबैत अछि मुदा अनका लेल भ्रष्टाचार आ अपना लेल अनीतिकेँ सदाचार बुझैत अछि। की अहाँ एहिसँ अवगत नहि छी वा जानि बूझि कऽ हमरासँ कहबाबऽ चाहैत छी!

प्रश्न– हम अपनेक साक्षात्कार लऽ रहल छी, जाहिमे अहाँक संस्मरण, अनुभव, समाजमे चलि रहल गतिविधिक विषयमे अहाँक विचार जानऽ चाहैत छी। तेँ हम सभ प्रकारक प्रश्न पूछि रहल छी आ अपने उत्तर सेहो दऽ रहल छी। की एहि तरहें साक्षात्कारमे ई सभ पूछब अनटोटल-अनसोहांत छैक?

❑ नहि से हम नहि कहय चाहैत छी, हमर कहब अछि जे अहूँ हमर हमजोली-छाया रूपमे संग रहैत छी। तखन किएक जानऽ चाहैत छी। (कने विलमैत) हँ, आब बुझलहुँ जतऽ जाहि वस्तुक बोलबाला भऽ जाइत छैक, ओतय अनीति चकचक करय लगैत छैक आ ततऽ छाया सेहो संग नहि दैत छैक आ ओ व्यक्ति नितांत एसगर भऽ जाइत अछि व्यथित भऽ कऽ। अहाँ हमरा ओही स्थितिमे लऽ जाय चाहैत छी। की यैह बात छैक ने।

प्रश्न– अहाँक संघर्ष ओ जीवनयात्राक संबंधमे जानऽ चाहैत छी जे अहाँक मानसमे घुरिआइत रहैत अछि। अच्छा ई कहल जाय जे अपनेक शिक्षा-दीक्षा कोना भेल? की ओहू समयमे संघर्ष करय पड़ल आकि बेस कठिनाह नहि भेल!

❑ सत्य पूछू तँ हमर जीवन पिता जकाँ संघर्षसँ प्रारंभ भेल जे निरंतर चलि रहल अछि। अन्तरक संघर्ष आ वाह्य संघर्ष प्राय: शोणितेमे अछि। तेँ कहब जे बहुत बात एहन होइत छैक तकरा लोक झंपनाइये नीक बुझैए मुदा जेँ कि पिता जकाँ हमर रूप, रंग, संघर्ष सभ दिन संग रहल तेँ हुनके जकाँ हमर स्वभावो भऽ गेल। हमर दीक्षा हुनक रहन-सहन, कार्य-व्यवहार, अध्ययन-मनन, लोक व्यवहार, अपना प्रति, परिवारक प्रति, समाजक प्रति सोचक प्रभाव हमर जीवनमे सर्वाधिक पड़ल आ ओही न्योपर हम आइयो ठाढ़ छी।

रहल शिक्षाक बात तँ ओ बेस रोचक अछि। 1960 मे ओ 'मिथिला मिहिर' साप्ताहिकमे आबि गेल रहथि आ हम, माँ आ तीनू बहिन पटनामे आबि गेल रही। मुदा जेँ कि हुनका 'मिहिर'क व्यस्तता तते रहनि जे हमरा सभकेँ प्रात: काल जगबासँ पहिने निकलि जाथि आ रातिमे जखन सूति रही तखन ओ घर आबथि। हम सब हुनका रवि दिन किछु काल देखियनि। ई क्रम 1963 धरि चलल, हम सब घरे पर रही। जखन आठ वर्षक भऽ गेलहुँ तँ माँ केँ बड़ चिन्ता भेलनि आ एक दिन हुनका कहलथिन बेटा पैघ भेल जाइए कतहु नाम नहि लिखा देबैक। तखन पिता सेहो चिन्तित भेलाह मुदा पलखति नहि रहबाक कारणे एतवे बजलाह-टीक छै, देखै छिऐ।

एक दिन प्रात: काल किछु पाहुन आबि गेलथिन तँ ओ सबेरे नहि निकलि सकलाह। ओही बीचमे मकान मालिकक छोट भाइ मुन्ना बाबू बाहर अयलथिन तँ हुनका हमरा सम्बन्धमे कहलथिन। ओ कहलथिन जे एखन किछु बाल मनोहर पोथी आ एक दू आर किताब आनि दियनु तावत पढ़त, आब मइ मासमे कोना कतहु नाम लिखयतनि। सैह कयल गेल। हमरा पढ़बामे मोन लागि गेल सभ पोथी डेढ़ मासने पढ़ि गेलहुँ जाहिमे माँक योगदान छलनि आ ओ हमरा प्रथम शिक्षक भेलीह। एवं क्रमे दिसम्बर धरि चारिम वर्ग धरिक सभ पोथी पढ़बा आ लिखबामे सक्षम भऽ गेलहुँ। जनवरीमे मुन्ना बाबू हमरा दयानन्द हाई स्कूलमे पाँचम वर्गमे नाम लिखाबऽ हेतु लऽ गेलाह। जेँ कि हम हिन्दी अखबार सेहो पढ़ि लैत रही तेँ हमर जेना टेस्ट भेल ताहिमे हम पाँचम वर्ग धरिक जे पूछल गेल अथवा लिखबाओल गेल सभक उत्तर देलिऐक। ताहि समयमे बिहार फेमक प्रिन्सिपल श्री कैलाश सिंह रहथि। मुन्ना बाबू हमरा हुनका

लग लऽ गेलाह ओहो किछु-किछु पुछलनि आ सभटाक जबाब देलियनि, ओ प्रसन्न होइत पीठ ठोकलनि आ एक्केबेरमे हमर नामांकन छठम वर्गमे दयानन्द स्कूल, मीठापुर पटनामे भेल।

प्रश्न– एहिसँ आगाँ एहिना सहज रूपें पढ़ौनी चलैत रहल की....?

❑ नहि, बहुत बाधा अबैत गेल। मुदा माँक आशीर्वाद सँ आगाँ बढ़ैत रहलहुँ, बीचमे एक दिन रामनवमीकेँ हम, छोटकी बहिन आ माँ संग महावीर मंदिर जाइत रही। रस्तेमे दुर्घटना भेलैक आ माँकेँ माथमे चोट लगलनि आ ककरो चिन्हब बिसरि गेलीह। एतहिसँ एकाएक हम वयस्क भऽ गेलहुँ आ हमर हाथमे पारिवारिक दायित्व-कर्त्तव्यक झोरा रूपमे आबि गेल जे आइ धरि हाथमे संग चलैत अछि। कोनो विशेष परिस्थिति चिन्ता वला होइक हुनक दिमाग बहकि जानि। जहिया हम मैट्रिकक परीक्षा 14हम-15हम वयसमे देबऽ जाइत रही तँ भैया पूर्णेन्दु चौधरी हुनका बहुत प्रताड़ित करैत पिताक संग दिमागक डाक्टर हसीब ओतऽ लऽ जाइत रहथिन आ माँ हमरा परीक्षा देबऽ लेल कनैत विदा कयने छलि। ओकर ई बरमहल ई स्थिति भऽ जाइक आ हम ओकरा लग बैसल कानी अथवा जे कहय, उलटा-सीधा, कयल करी।

मैट्रिक सँ लऽ इन्टर, बीए., आ एम.ए. पढ़ाइ धरि एहिना दिन बितैत गेल आ एम.ए.क परीक्षामे तँ हमरा परीक्षा नहि छोड़िहें, आदेश दैत, हमरा उतरी पहिरा विदा भऽ गेलीह माँ.........।"

(कने रुकैत चौधरी पुन: कहय लगलाह) हमर प्रथम शिक्षक विदा तँ भऽ गेलीह मुदा शिक्षा संग तेहन दीक्षा देलनि जे आइ धरि जीवनक संबल बनल अछि।

प्रश्न– अपनेक पढ़ाइमे व्यवधान होइत रहल मुदा अहाँक लेखन आ कहबाक ढ़ंग एहन अछि जे सभ बात वेबाक कहैत छिऐक, एकर की राज?

❑ सभसँ पहिल बात 'Never stood first' ई बोध, दोसर, मैट्रिक धरि हिन्दीमे पढ़ौनी, सेकेन्ड डिविजन होइतो, पटना कालेज पटना विश्वविद्यालयमे इन्टर सँ एम. धरि अंग्रेजी माध्यमसँ पढ़ौनी। फेर मिथिला मिहिरमे 1981 सँ 89 धरि मैथिलीमे पत्रिका-दैनिकमे नोकरी, सभसँ अन्तमे 1995 सँ 2002 धरि हिन्दी दैनिक आर्यावर्तमे नोकरी आ तकर बाद समय-साल, पूर्वोत्तर मैथिलीक सम्पादन। एहि

सभसँ बढ़ि कऽ 1991 सँ अद्यपर्यन्त हजारो पोथीक मुद्रण आ प्रकाशनक कार्यसँ ज्ञान अर्जन, निरंतर धैर्य, समन्वय, विरोध, सहयोग आदि शब्दक मर्यादा बूझि काज करब सिखौलक अछि। एकरा अहाँ जाहि रूपमे बूझी अहाँपर निर्भर करैत अछि।

प्रश्न– बेर-बेर मुद्रक आ प्रकाशकक बात उठैत छैक, कहल जाइत छैक मैथिलीक एकोटा प्रकाशक छैके नहि। एहि पर अहाँक की कहब अछि।

❑ पहिने बात बुझियौ, प्रकाशक ओकरा कहैत छैक जे अपन पाइ सँ अनकर किताब छापय आ मुद्रक ओकरा कहैत छैक जे पाइ लऽ कऽ काज करय । आ जे ई दुनू काज करय से अपनाकेँ मुद्रक एवं प्रकाशक दुनू कहबैत अछि। एहि बिन्दुपर सोचि कऽ देखियौक जे मैथिलीक प्रकाशक एहि स्तरपर काज करैत अछि की नहि। शेखर प्रकाशन ई काज दुनू स्तर पर कयलक अछि। हमरा जनैत यैह काज पूर्वमे पुस्तक भंडार आ ग्रन्थालय सेहो करैत छल। हिन्दीयोमे यैह स्थिति छैक।

हम अपन पिताक कुल 70%, पोथी स्वयं छपने छी, अपन सभटा पोथी सेहो अपने छपने छी आ पाठ्यक्रम मूलक वा एहन लेखक जिनक पोथी हम बेचि लेब, से पूर्णत: अपना दमपर छपने छी। संगहि बहुत लेखककेँ 50% आंशिक खर्च सहयोगसँ मुद्रित कयने छी आ आधा-आधा पोथी बाँटि लेने छी। आब देखबाक ई अछि जे ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा वा पुस्तक भंडार)वा आन प्रकाशक कतेक मैथिली अपन दमपर प्रकाशित कयने अछि। हमरा जनैत आब जतेक पोथी छपि रहल अछि तकर दशांसो ई सभ दीर्घ अवधिमे प्राय: अपना दमपर नहि छपने छथि। प्रकाशनक की स्थिति वर्तमानमे छैक से कैक ठाम लिखने छी से देखल जा सकैत अछि।

एतऽ हम किछु पोथीक चर्च अवश्य करय चाहब जे हम छपलहुँ से सोलहो अपना अपना दम पर–

पं० सीतारामझा अलंकार दर्पण, पर्व निर्णय,
अजित आजाद - युद्धक विरोधमे बुद्धक प्रतिहिंसा (पहिल पोथी)
पं० काशीकान्त मिश्र 'मधुप' - मधुप गीतिका
पं० गोविन्द झा - भाषा शास्त्र प्रवेशिका (दो. सं०) एवं सुबोध मै० व्याकरण।

श्री बच्चा ठाकुर– मैथिली आलोचना साहित्यक दिशाबोध।
श्री रमानाथ झा- प्रबंध संग्रह
डा० रमण कुमार झा - भविष्णु, कृष्णजंन्म विवेचन, सफलता सोपान।
किशोर केशव/वंदना किशोर (सं.) - अक्षर पुरुष
विभूति आनन्द - गोनू झाक खिस्सा
उषा किरण खान - भामती (दोसर संस्करण)
मायानन्द मिश्र–मैथिली साहित्यक इतिहास (तेसर संस्करण)
श्री कीर्तिनारायण मिश्र- ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप (दो. संस्करण)
शिवशंकर श्रीनिवास - मैथिली उपन्यासक आलोचना।
चंदा झा - सुन्दरकाण्ड।

एखन एतबे स्मरण अछि मुदा कुल 52 पोथी अपन दमपर छपने छी।

आधा-आधी खर्चपर सेहो लगभग तीन दर्जनसँ बेसी पोथी छपने छी आ हम उमेद करैत छी जे हुनका सभकेँ ई स्वयं स्वीकार करबाक चाहियनि । हमरा जेँ कि इतिहास नहि बनयबाक तेँ एतबे कहब पर्याप्त अछि। एक व्यक्ति जे साधनहीन हो से की कऽ सकैछ। फेसबुक तँ बहकल मंच अछि जकरा जे लिखबाक होइक, लीखय हमरा पर ओकर कोनो असरि नहि पड़ैत अछि। हँ, प्रसन्नता एहि बातक अछि जे 90 प्रतिशत हमर पोथी सभ दू सँ छओ संस्करण छपि चुकल अछि आ बिका रहल अछि हमरा द्वारिये-द्वारिये नहि जाय पड़ैत अछि।

प्रश्न– किछु व्यक्तिगत प्रश्न कऽ सकैत छी?

❑ किएक नहि, मुदा ओहिसँ पूर्व 'व्यक्ति' की अछि से बूझि लियऽ। कोनो व्यक्ति परिवारमें माताक गर्भसँ जन्म लैत अछि, पिताक छाहरिमे आ मायक स्नेह, वात्सल्य, प्रेम-त्याग-सर्मपणक बले पालित-पोषित होइत अछि। परिवारमे भाइ-बहिन, दादा-दादी-कका-काकी, नाना-नानी-मामा-मौसीक साहचर्यमे रहि लार-दुलार पबैत अछि, सीखैत अछि। पैघ भेलापर अड़ोस-पड़ोस, मित्र-सखासँ जुड़ैत अछि, विद्यालय-महाविद्यालयमे शिक्षकलोकनिक सम्पर्कमे पढ़ैत-लिखैत रोजगार पयबाक योग्य होइत अछि। एही समयमे मूलत: ओकर चरित्र-निर्माण होइत छैक आ ओ आगाँक जिनगी बितयबाक हेतु शनै: शनै: बढ़ैत जाइत अछि। एही क्रममे ओ सामाजिक क्रिया-प्रतिक्रियामे प्रवेश करैत अछि आ समाजमे व्याप्त

गुण-दोष, ईर्ष्या-प्रेम, त्याग-बलिदान, सहयोग-समन्वय, संवेदनात्मक कठोरता, करुणा आदिक अनुभव प्राप्त करैत अछि। जँ कि परिवारक संग बेसीकाल रहैत अछि तँ परिवारसँ जुड़ल ऊँच-नीच, कलह-ईर्ष्या, प्रेम-मनुहार सभकेँ भोगैत परिवारमे रहनाइ श्रेयष्कर बुझैत अछि। क्यो-क्यो सामाजिक जीवनमे लेखनमे रमि जाइत अछि, क्यो राजनीतिमे, क्यो गीत-संगीत-कला आदिमे रमि जाइत अछि। एहन व्यक्ति जीवनक एहि प्रवृत्ति विशेषसँ बेस चिन्हल जाइत अछि मुदा ओकर जीवन आ जीवनक आधारकेँ कम लोक जानि पबैत अछि।

ई व्यक्तिक एक पक्ष होइछ जे मूलत: सार्वजनिक नहि भऽ पबैत छैक आ ओकर सम्यक मूल्यांकन नहि पबैत छैक। जखन ओ गत भऽ जाइत अछि तखन ओकरा नमन, शत-शत नमन, सादर नमन, भावपूर्ण श्रद्धांजलि, अपूरणीय क्षति आदि शब्दसँ स्मरण कयल जाइत जाइत अछि। आब पूछू की अहाँ जानऽ चाहैत छी हमरा सँ!

प्रश्न– व्यक्तिगत विषयमे तँ अहाँ स्वयं कहि देलहुँ आब की पूछू। हँ, अपनेक दिनचर्या की अछि से कहबै?

❑ हम प्रात: पाँच बजे तक बारहो महीना जागि जाइत छी आ खाली पेटे पानि पीबि अपन कोठली सहित घरक बाहरी क्षेत्र (अन्य कोठली जाहिमे अन्य सदस्य सूतल रहैत छथि केँ छोड़ि) साफ-सुथरा कऽ घरक कचरा जमा करैत छी। जे थोड़ बहुत वर्तन गंदा भेटैत अछि तकरा सिंकमे राखि साफ कऽ राखि दैत छी। एकर बाद मोटर चला कऽ दुनू मकानक टंकी भरैक क्रममे पीबाक हेतु जल भरि लैत छी। एही बीचमे दूधवला अबैत अछि, कचरा लऽ जायवला गाड़ी आबि जाइत अछि ओकरासँ लऽ दऽ कऽ निवृत होइत छी। हमर घरक विभिन्न भागमे लगभग 50-55 टा गमला अछि ताहिमे पानि दऽ ओकर देखभाल करैत छी। एही बीचमे पेपर दऽ जाइत अछि। तकरा टेबुल पर राखि भोरुका जलपान सत्तू पीयैत छी। तावत एक कप चाह भेटि जाइत अछि से पीबैत, अखबार पढ़ैत पाँच छओ टा दवाइ खा लैत छी। एतवामे लगभग 8-साढ़े आठ बजैत अछि। एही बीचमे मीठू (कुकुर)क सेवा-सत्कार सेहो करय पड़ैत अछि। रहल हमर भोजनक बात। गत 15 वर्ष पूर्व धरि कोनो प्रकारक

निशावला वस्तु छोड़ि सभ किछु खाइत रही मुदा ओकर पश्चात् पथ्यानुसार भोजन करैत छी। तीन वर्ष पूर्व पटनाक ख्यात चिकित्सक अजित मिश्र, पटना ओतऽ अपन बालक राजाशेखर संग देखबऽ गेल रही। ओ आध घंटा देखलाक बाद कहलनि-हे सम्पूर्ण शरीर जर्जर भऽ गेल अछि, रोग कोनो नहि अछि मुदा सदिखन किछु ने किछु होइते रहत। पुछलियनि-हम कष्टमे छी आ अहाँ एना कहैत छी। ओ ओतऽ उत्तर देलनि-एकटा कार जँ 100 किलोमीटर रोज चलाओल जाय तँ 15 वर्ष चलत मुदा 1000 किलोमीटर चलेबैक तँ सात-आठ वर्षमे थस धऽ लेत। अहाँ अपन शरीरक यैह गति कऽ लेलहुँ, तेँ ई स्थिति अछि। पुन: कहलनि अहाँ जेना आ जे सभ खाइत छी ओहिसँ बेसी ने परहेज कयल जा सकैछ ने आर ओनो उपाय तेँ हम की कहू। ई कहैत ओ Becosule performance कैप्सूल आ निन्दक गोली लीखि विदा कऽ देलनि। यैह भेल हमर भोजन आ उपचारक व्यवस्था। आब अपना मोने दवाइ कीनैत छी आ भोजन जकाँ भोर सँ साँझ धरि खाइत छी।

हँ, पहिने, दू घंटा प्रात: काल किछु-किछु लिखैत रही से एखन छूटल अछि। आब जखन पलखति भेटैत अछि लिखैत-पढ़ैत छी। आ एकर बाद स्नान, भोजन कऽ कार्यालय हेतु तैयार भऽ विदा भऽ जाइत छी। भरिदिन विद्यार्थी-पाठक, मित्र, पोथी आ चिन्तनमे निमग्न रहैत छी। मोबाइल देखैत छी, नव पोथीक अवलोकन करैत छी, दुनियाकेँ चिन्हबाक प्रयत्न करैत छी। अपन आर्थिक, मानसिक ओ शारीरिक स्थितिक बारेमे सोचैत छी।

हँ, गत 30 वर्षसँ अपन कपड़ा आ अपन आइंठ वर्त्तन धोयबनहि बिसरैत छी, जँ गंभीर रूपें बीमार नहि रहलहुँ तँ। प्रयत्न करैत छी कर्ज नहि ली, ककरो प्रताड़ित नहि करी। सूतलमे ककरो नहि उठाबी, घरमे ककरो भोजनमे दिक्कत नहि से इन्तजाम अवश्य रहय। संध्याकाल कार्यालय सँ घुरैत काल घरक घटल सामान तरकारी आदि कीनैत घर घुरैत छी। किछु आराम कयलाक बाद माता-पिताकेँ स्मरण करैत छियनि। साढ़े सात सँ आठक बीच भोजन भेटि जाइछ से करैत मीठूक सेवा करैत नओ बजे ओछाओन पर आबि जाइत छी आ किछु पढ़ैत-देखैत सूति रहैत छी। यैह अछि हमर दिनचर्या।

अपन परिवारक विषयमे 'मर्मान्तिक: शब्दानुभूति' पोथीमे जे बता चुकल छी, ओहिमे अद्यावधि कोनो परिवर्तन नहि भेल अछि। हमर लेखन, हमर जीवन स्तर, हमर शिक्षा-दीक्षाक विषयमे पूर्वमे कहि चुकल छी तेँ एतद्धि बूझू। आर कोनो प्रश्न वा जिज्ञासा?

प्रश्न— अंतिम प्रश्न पूछी! कोनो हर्ज नहि ने?

❑ पूछू, अवश्य पूछू।

प्रश्न— अपने कोनो एहन गलती कयने होइ जे हरदम कचोटैत होअय।

❑ गलती हम अपन जीवनमे बहुत रास कयने छी जकर परिणामो हम भोगैत अयलहुँ अछि आ भोगैत रहब मुदा एकटा गलती एहन कयलहुँ से ताजिनगी हमरा बेधैत रहत, बरी नहि भऽ सकब।

प्रश्न— से की?

❑ हम अपन एकमात्र पुत्र राजाशेखरकेँ इजीनियरिंगक पढ़ाइक खर्च नहि दऽ सकलियनि जे कि हुनक सभँ पैघ लक्ष्य रहनि। ओ इन्टरक बाद ओहि हेतु चयनित सेहो भऽ गेल छलाह मुदा.....। आ एतहि सँ हमर जीवनक दिशा ओ दशा बदलि गेल, हम निर्जीव-निराकार मनुष्यक रूपमे अपन काया लऽ कऽ पृथ्वीक भार बनल जीव रहल छी। अहाँ एकरा पुत्र-मोह कहि सकैत छी, से तँ छैके, मुदा एहि 'केस'मे हम दायित्व आ कर्तव्यसँ च्यूत भेल छी। बस आब एहिसँ बेसी आर किछु नहि कहि सकब।

नहि आब कोनो प्रश्न नहि, जिज्ञासा नहि। जावत अहाँ तावत हमरो अस्तित्व। देखा-चाही हम अहाँ अपना संग कहिया धरि छी। अहाँक सोच-विचार, स्थिति देखैत हम बेसी किछु नहि कहब मुदा एतवा अवश्य कहब जे एहन कायाक-छाया बनबा लेल हम सभ जीवनमे तैयार रहब, आर की कही।

एतवे कहैत शरदिन्दु चौधरीक छाया निपत्ता भऽ गेल। अनेक विद्यार्थीक छाया टेबुलक सम्मुख देखि ओ बजैत छथि-आउ, बैसू, की बात?

***

शरदिन्दु चौधरी

जन्म : 7-10-1956, मिश्रटोला, दरभंगा, बिहार

माता : स्वर्गीय मोती देवी

पिता : पं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी

शिक्षा : एम.ए. राजनीतिशास्त्र, पटना, विश्वविद्यालय, पटना-1,
एल.एल.बी., मगध विश्वविद्यालय, गया

वृत्ति : पत्रकारिता
1981-84, मिथिला मिहिर, साप्ताहिक
1984-86, मिथिला मिहिर, दैनिक
1987-89, मिथिला मिहिर, मासिक
1995-2002, आर्यावर्त, हिन्दी दैनिक (फीचर सम्पादक)
समय-साल, मैथिली द्वैमासिकक सम्पादक 2000 सँ 2014
पूर्वोत्तर मैथिल, गुवाहाटी, सम्पादक, 2015-16

सम्प्रति : शेखर प्रकाशन (मुद्रक, प्रकाशक एवं पोथी विक्रय केन्द्र)क व्यवस्थापक - संचालक।

प्रकाशित कृति : ❖ जँ हम जनितहुँ ❖ बड़ अजगुत देखल ❖ गोबरगणेश ❖ करिया कक्काक कोरामिन (व्यंग्य संग्रह) बात-बातपर बात मर्मान्तक-शब्दानुभूति, हमर अभाग : हुनक नहि दोष, साक्षात् (संस्मरणात्मक निबंध)।

सम्पादक : मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा ❖ साक्षात्कारक दर्पणमे सुधांशु शेखर चौधरी ❖ विद्यापति गीतिका (दू भाग) ❖ मैथिली गद्य गौरव ❖ पाठ्य पुस्तक निगमक पांचम वर्गक मैथिली पोथी ❖ अभिमत (हिन्दी)।
20 सँ बेसी स्मारिकाक संपादक।
आकाशवाणी, दूरदर्शनसँ दर्जनों वार्ता प्रसारित एवं हिन्दी दैनिक तथा मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे सयसँ बेसी रचना प्रकाशित।

विशेष : दूरदर्शन, आकाशवाणी, भाषा संस्थान, साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादमी एवं मैथिल संस्था सभमे आजीवन सक्रिय भाग नहि लेवाक निर्णय।

सम्पर्क



शेखर प्रकाशन

प्रथम तल्ला, भुवनेश्वर प्लाजा, न्यू मार्केट, पटना-1

मुख्यालय : 2A/39, इन्द्रपुरी, पटना-800024

मो. - +91 93341 02305, 7759090913